IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

चन्द्रकांता की कहानियाँ : कश्मीर समस्या के विशेष संदर्भ में।

Birendra Kisku
PhD Research Scholar
Visva Bharati University

प्रस्तावना : कहानी आधुनिक हिन्दी गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय व सशक्त विद्या है। अपनी रोचकता, मार्मिकता, घटना व संवेदना की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के कारण यह विद्या पाठकों को न केवल आकर्षित करती है अपितु उन पर अमिट छाप छोड़ती है। इस दृष्टि से कहानी अनुभव विचार संवेदना तीनों पक्षों को साथ लेकर भाषायी कौषल से पाठक तक संप्रेषित होती है। कहानी की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। चिरकाल से ही मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पक्ष, लोक कथाओं को कहानी के माध्यम से संजोकर इनसे अपने नवीन पीढ़ी को अवगत कराता रहा। लेखिका चन्द्रकांता एक समर्थ कथाकार के रूप ख्याति प्राप्त है। माननीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति और मानव जीवन की जटिलताओं का मार्मिक अंकन करने में उन्हें महारत हासिल है।

अतः चन्द्रकांता जी ने कष्मीर समस्या और आतंकवाद पर कई कहानियों और उपन्यासों की रचना की है। आतंकवाद आज 21वीं सदी की एक गंभीर वैष्विक समस्या बनकर उभरी है। दुनिया के लगभग सभी महाद्वीप किसी न किसी रूप में आतंकवाद से जूझ रहे हैं। आतंकवाद ऐसी हिंसक विचारधारा है जहाँ मुठीभर लोग अपनी राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक हितों या लक्ष्यों पूर्ति के लिए कानून व्यवस्था को ध्वस्त कर हिंसा का मार्ग अपनाता है। अपनी लक्ष्यों की पूर्ति के लिए निर्दोष लोगों की हिंसा का षिकार बनाता है। इसके मूल में धार्मिक कट्टरता एवं सांप्रदायिक विद्वेष की भावना है जो समाज एवं राष्ट्र के लिए घातक व विभाजनकारी शक्ति के रूप में उभरता है। इस तरह समाज में अराजकता और अषांति का माहौल बना रहता है जो राष्ट्र को विकास में बाधक है।

बीज शब्द : कष्मीर समस्या, आतंकवाद, विस्थापन, पलायन, शरणार्थी संकट, कष्मीरी पंडित, सांप्रदायिकता।

मूल आलेख : भारत की आजादी के बाद से ही कश्मीर समस्या देश के लिए गंभीर चुनौती बनकर उभरी। कष्मीर समस्या के कारण ही भारत पाकिस्तान दो देषों के बीच आजतक तनावपूर्ण संबंध है। जाहिर है ऐसी परिस्थिति में कश्मीर समस्या को नजरअंदाज करना बहुत बड़ी होगी। क्योंकि कष्मीर समस्या ही भारत पाकिस्तान दो देषों के बीच कूटनीतिक संबंध का भविष्य तय करता है। परवती काल में कश्मीर समस्या ही दो देशों की समृद्धि, उन्नति, अमन चैन व शांति में रोड़ा बनती है। आखिर ऐसी कौन सी कारण है जिससे कश्मीर समस्या उपजी? शासक वर्ग का स्वार्थ एवं अदूरदर्शिता किस प्रकार कश्मीर समस्या का मूल कारण बनता है। निश्चय ही इस पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है।

कश्मीर : 1930 का जनविद्रोह

सन् 1931 में लोकराज्य की माँग के लिए उपजी जनांदोलन ने साम्राज्यशाही होना शासन की नींव हिला दी। इस जनांदोलन से जम्मू कष्मीर की राजनीतिक स्थिति चरमरा जाती है। हो भी क्यों नहीं 1930 दषक के दौर में कष्मीरी जनता कष्मीर के अंतिम डोगरा शासन महाराजा हरि सिंह से त्रस्त थी। इसके कई पहल थे– उनमें एक यह कि मुस्लिम बहुल क्षेत्रा कष्मीर में हिन्दु जमींदारों का प्रभुत्व और गैर कष्मीरियों के हाथो में प्रशासनिक शक्तियाँ निष्चय ही बहुसंख्यक कश्मीरी जनता उपेक्षित महसूस कर रही थी। दूसरी तरफ बढ़ती मंहगाई, अंधाधुंधकर, मंत्रियों और जमींदारों का अत्याचार भ्रष्टाचार से आम जनता त्रस्त थी।

सन् 1931 में लोक राज्य की माँग को लेकर डोगरा शासन के खिलाफ कुछ मुस्लिम नेताओं की भड़काऊ भाषण ने इस्लामिक कट्टरपंथियों को बढ़ावा दिया। इस घटना के पष्चात् डोगरा प्रषासन ने जनांदोलन के खिलाफ दमनकारी नीति अपनाई। डोगरा अधिकारियों ने कुछ मस्जिदों को अपने अधिकार में लिया और मस्जिद दरगाहों में राजनीतिक बैठक या कार्यवाही पर पाबंदी लगा दी गयी। इस कार्यवाही को लेकर मुस्लिम समाज में आक्रोष था चूँकि यह धर्म के मामले में अनाधिकार हस्तक्षेप है। दूसरी ओर इन परिस्थितियों को अवसर में लेकर इस्लामिक कट्टरपंथी अपना पाँव पसारने के लिए किया। धीरे–धीरे कट्टरपंथियों ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं के खिलाफ नफरत फैलाना शुरू किया। चाक चौराहों पर लाउडस्पीकर को हिन्दु विरोधी, भारत विरोधी पोस्टरबाजी के नारे गूंजने लगे–

"निजामे मुस्तफा लाकर रहेंगे।

भारतीय कुत्तों वापिस जाओ।"[1]

15 अगस्त सन् 1947 में भारत विभाजन के बाद कष्मीर एक स्वतंत्रा प्रदेष ही था। हालांकि अंग्रेजों ने महाराजा हरि सिंह पर पाकिस्तान में विलय होने का भरसक दवाब बनाने की कोषिष की थी। कष्मीर मुष्किल बहुल होने के कारण पाकिस्तान में विलय हो जाना उन परिस्थितियों मे सामान्य सी बात थी क्योंकि भारत पाकिस्तान का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था। जबकि कष्मीर के चहेते युवा नेता शेख अब्दुल्ला का झुकाव नेहरू और कांग्रेस की ओर होने की वजह से कष्मीर का भारत में विलय चाहते थे। यहाँ यह बात ध्यान देने की है कि 1930 के जनविन्द्रोह में शेख अब्दुल्ला नायक बनकर उभरे थे। इसी कारण डोगरा शासन के अंतिम महाराजा हरि सिंह शेख अब्दुल्ला के घोर विरोधी थे, इसलिए उनके लिए भारत से विलय का मतलब है कांग्रेस और अब्दुल्ला को गले लगाना। इस प्रकार महाराजा सिंह कष्मीर की परिस्थितियों को लेकर गंभीर दुविधा में थे।

"एक स्वतंत्रा राष्ट्र के रूप में कष्मीर का बड़ी ताकतों से घिरे आजादी बरकरार रख पाना लगभग असंभव था। वह तभी संभव था जब दोनों ताकतें एक स्वतंत्रा कष्मीर के लिए सहमत हुए और उसकी स्थिरता की गारंटी दे।"[2]

इस प्रकार शुरू से ही स्वतंत्रा कष्मीर का अस्तित्व लंबे समय तक असंभव दिख रहा था।

धारा 370 और कश्मीर

जब कश्मीर का भारत में विलय या एकीकरण का जोर चल रहा था तब नेहरू, गाँधी और भारत का शासक वर्ग कश्मीर की एकीकरण कर अन्य राज्यों की तरह बना देने की पक्षधर थे। लेकिन यह भूलना नहीं चाहिए कि आजादी की लड़ाई में कांग्रेस के साथ कंधे मिलाकर लड़ने वाली नेशनल कांग्रेस और शेख अब्दुल्ला कश्मीर का भारत में विलय के साथ कष्मीरियों की अपनी स्वायत्तता और अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप शासन का स्वप्न थी उनकी चाहत थी। वहीं

कांग्रेस में व्याप्त दक्षिणपंथी हिन्दुत्ववादी ताकतों की उपस्थिति किसी से छिपा नहीं, राष्ट्रस्वयं सेवक संघ हिन्दु महासभा, अकली दल, कट्टर इस्लाम विरोधी थे। यही कारण है कि नेषनल कॉफ्रेंस और कांग्रेस बीच अंतर्विरोधों का सिलसिला शुरू हुआ। कश्मीरी अस्मिता जो मुगल से लेकर डोगराओं तक कुचली गई थी, शेख अब्दुल्ला उस अस्मिता के लिए लड़कर कष्मीरी जनता को स्वायत्तता प्रदान करना चाहते थे। शेख अब्दुल्ला की माँग और कष्मीरी प्रजा के दबाव में महाराजा हरि सिंह ने विलय पत्रा में विषेष शर्तो और अधिकारों को जोड़ा गया। इस तरह से कष्मीर को विलय विषिष्ट परिस्थितियों में हुआ जिसका परिणामस्वरूप ही कष्मीर में धारा 370 लागु हुआ। धारा 370 के तहत् केन्द्र सरकार के पास जम्मू कष्मीर को लेकर तीन मामलों में वैधानिक शक्तियँ प्राप्त थी और इस तरह जम्मू कष्मीर विदेषी मामलों, सुरक्षा तथा संचार के क्षेत्रा में भारत के साथ जुड़ गया। धारा 370 के अंतर्गत जम्मू और कष्मीर को अपना अलग संविधान बनाने की इज्जात दी गई। हालाँकि यह अस्थायी प्रावधान है और उसे राज्य की संविधान सभा से पुष्ट करना पड़ेगा। धारा 370 भारत सरकार को कष्मीर में अपनी शक्यिाँ सीमित करती है और यहीं से अलगाववादी ताकतों को विशेष बल मिलता है। निश्चय ही इस संदर्भ में कहा जाए कि– **''नेताओं की महत्वाकांक्षाओं और केन्द्र सरकार के ढुलमुल रवैये ने कष्मीर को सुधारने संबारने के बहुत कम मौके दिये। स्थानीय नेताओं में एक दो को छोड़कर, कश्मीर के भारत के साथ अधिमिलन की वैधता को बार–बार नकारा। राष्ट्र ने तुष्टिकरण की नीति अपनाकर कश्मीर को धारा 370 का प्रावधान किया, अलग प्रधान अलग विधान, अलग निषान देकर राष्ट्र से अलग और दूर होने के कारण दिये।''**[3] इस तरह कष्मीरी जनता भारत सरकार से अधिक पाक परस्त शक्तियों के प्रति झुकाव रखता है।

चन्द्रकांता की कहानियों में आतंकवाद

लेखिका चन्द्रकांता अपने कहानियों और उपन्यास में कष्मीर समस्या और इससे उपजे आतंकवाद, विस्थापन और शरणार्थी संकट का बड़ा ही सजीव और मार्मिक अंकन क्रिया है। बतौर एक कष्मीरी लेखिका निजी जीवन के अनुभवों से प्रेरित होकर कष्मीर समस्या और आतंकवाद को बतौर किसी धर्म विषेष से जोड़कर एवं पूर्वाग्रहों की चौहद्दी लांघकर रचनाएं की है। वह स्वयं भी कहती है– **''कश्मीर के संदर्भ में जो कहानियाँ लिखी है विषेषकर आतंक से प्रभावित लोगों की व्यथा कथाएं जो मेरे अपनों की घटी उन्हें तटस्थ होकर लिखने में मुझे समय अंतराल की जरूरत पड़ी है। काली बर्फ, शरणागत दीनार्त, वितस्ता का जहर, बदलते हालात में और किस्सा गाशकौल कहानियों के संदर्भ मेरे त्रासद अनुभव रहे हैं।''**[4]

कश्मीर की मूल समस्या इतिहास की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है जहाँ बहुसंख्यकवादी धर्म और राजनीति का मुखौटा बनकर आती है और अल्पसंख्यकों के प्रति हिंसक और घातक बन जाती है। कष्मीर में जहाँ हिन्दु अल्पसंख्यक हो गये तथा मुस्लिम बहुसंख्यक, मुस्लमानों द्वारा अल्पसंख्यकों को निषाना बनाया जाना भय, असुरक्षा और आतंकत्रास्त माहौल उत्पन्न करता है। इस तरह शुरू होता है कश्मीर में कट्टरपंथियों द्वारा आतंकवाद और निष्कासन का दौर। पाक परस्त आकाओं के हुक्म में कश्मीर को इस्लामिक स्टेट बनाने का अभियान चल पड़ता है। ऐसे ही संकट ग्रस्त क्षण के लिए चन्द्रकांता की रचनाओं में शब्दबद्ध होती है, कष्मीर की चीखें, जहाँ हजार वर्षो से अपनी पुष्तैनी जर–जमीन में रह रहे कश्मीरियों को आतंकवादियों की धमकी से रातों रात वादी छोड़कर जाना पड़ता है। तभी तो नीलकंठ और उसके परिवार को आतंकियों द्वारा कश्मीर छोड़ने का अल्टीमेटम दिया जाता है। लेकिन सदियों से बसे लोगों के लिए पुष्तैनी जमीन छोड़ना क्या आसान है। इस कारण नीलकंठ के बेटे विषंभर का अल्टीमेटम के आगे खून खौलने लगता है– **''कौन कमबख्त कहता है हमें छोड़कर जाने की? हमारा घर है, कोई किरारदार है क्या अरे! की हैन हिस्ट्री ऑफ फाइव**

थाउजेंड इयर्स (पाँच हजार वर्षो का इतिहास है हमारा।''[5] और अंत में दहशतगर्दियों के गोली से मारा गया। इस तरह उसका नाम पाँच हजार वर्ष के इतिहास से कट गया।

कश्मीर में आतंकवाद से उपजे विस्थापन हो या देश विभाजन से उपजे पलायन, मानवीय संवेदनाओं की गहरी तह तक पहुँचकर लेखिका चन्द्रकांता ने उनकी अभिव्यक्ति की है। विभाजन और इससे सांप्रदायिक दंगे और पलायन का ह्रदय विदारक चित्राण कहानी सरहदों के नाम बने हुआ है– **''होश संभाला तो सुना कि माँ उस नन्हीं सी जान को छाती से चिपकाए जंगलों, झाड़ियों और अंधे खोहों में घुटनों के बल रेंगती कई कई दिनों से दरिदों से लुकती छिपती भागती रही थी। बिना पीछे मुड़े, पीछे मुड़कर देखना तो मौत के मुँह में झाँकना था। भरे बाजार में आत्मीयों के क्षत विक्षत शरीर देखना, भय से सुन्न करने वाला अहसास था।''**[6] आतंकवाद का साक्ष्य जहाँ होता है, वहाँ युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होती है। जहाँ युद्ध जैसी स्थिति होती है वहाँ होती है डर, अविष्वास और आतंकत्रास्त माहौल, संकटग्रस्त मानवता जो मनुष्य को दे जाता है विस्थापन, पलायन, शरणार्थी संकट, अपने घर घूटने की टीस। नब्बे दषक में कष्मीर में हुए घुसपैठ ने कुछ ऐसे ही परिस्थितियाँ प्रकट कर दी थी। सदियों तक आपसी भाईचारा और सदभाव में रहने वाले हिन्दु मुस्लिमों के बीच वैमनस्य की खाई उत्पन्न हुई। इस्लामिक कटरपंथी लगातार अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडितों को निशाने में लेकर उनके खिलाफ नारेबाजी करते हैं– **''या हमारे जिहाद में शरीक हो जाओ, या वादी छोड़कर भाग जाओ।''**[7] इस कारण अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडितों को पलायन करना पड़ा। इस तरह पीड़ित कश्मीरी पंडितों को घर जमीन जायदाद से वंचित होकर अपने ही देष में शरणार्थी बनकर जीने को विवष होना पड़ता है।

किसी क्षेत्र विशेष की अपनी अलग संस्कृति व पहचान होती है। उनका अपना व्रत–पूजन, खान–पान, तीज–त्योहार, पहनावा जिस पर गर्व करते हैं। इस दृष्टि से विस्थापन किसी क्षेत्रा के लोगों की सिर्फ बेघर ही नहीं करती बल्कि उन्हें नौकरी, रोजगार के अवसर संस्कृति व सांस्कृतिक जड़ों से अलग करती है।

इस्लामिक कट्टरपंथियों द्वारा घाटी से निष्कासित किये गये कष्मीरी पंडितों के पलायन के बाद जम्मू, दिल्ली, पंजाब या शरणार्थी कैंपों में जहाँ कहीं भी बसना पड़ता है, उनकी सांस्कृतिक अस्मिता पर खतरा मंडराता है। परिवेषगत बाहरी उनकी संस्कृति पर बाहरी प्रभाव पड़ता है। उनकी विशिष्ट संस्कृति व पहचा के कारण भेदभाव झेलते हैं। शरणार्थी कैंपों में सरकारी अधिकारियों द्वारा उनके प्रति भेदभावपूर्ण रवैया और स्थानीय लोगों के ताने सुनने पड़ते हैं।

''बेचारे के कब तक सड़ते रहेंगे कैंपों में। चार साल से ऊपर हो गये, पर कितनी देर? स्कूल कॉलेज बाजार, दुकान भर गए और जहाँ देखो वहाँ माइग्रेंट शॉप, माइग्रेंट कैंप, माइग्रेंट स्कूल।''[8] इस तरह विस्थापित कश्मीरियों का स्थानीय लोगों से संघर्ष होता है।

विस्थापित कश्मीरियों के लिये नये सिरे से जिंदगी की शुरूआत करने के लिए सिर्फ निवास स्थल ही नहीं अपितु शिक्षा और रोजगार की भी जरूरत है। ऐसे स्थिति में उनकी आर्थिक सहयोग करना सरकार का दायित्व बनता है। सरकार ने उन्हें कई तरह के सहयोग प्रदान किये हैं। केन्द्र व विभिन्न राज्यों की सरकार विस्थापितों की सहयोग के लिए कई नीतियाँ एवं योजनाएँ बनाते हैं। विस्थापित पंडितों को मुआवजे के तौर पर मिलने वाली राषि बढ़ाया गया।

सन् 2008 में उमर अब्दुल्ला के शासन काल में आतंकवाद से मारे गये लोगों को पाँच लाख रूपये की तथा क्षतिपूरक नौकरी देने का आदेष दिया गया। 2015 में ही कश्मीरी विस्थापितों के लिए 3000 अतिरिक्त नौकरियाँ और 6000 आवास देने के लिए 2000 करोड़ का पैकेज अनुमोदित किया गया। इस तरह विभिन्न राज्य कश्मीरी पंडितों की मद्द को आगे आये। जैसे दिल्ली प्रषासन ने एम0सी0डी0 के स्कूलों और केन्द्रीय विद्यालयों और दिल्ली विश्वविद्यालयों

में प्रवेश के लिए आरक्षण जैसी सुविधाएँ दी। उसी तरह पंजाब में स्कूली स्तर पर मुक्त षिक्षा का प्रावधान महाराष्ट्र में डिग्री और डिम्लोमा दोनों स्तरों पर तकनीकी संस्थानों में आरक्षण दिया गया। यह इतिहास सम्मत कि युद्ध की स्थिति में, आक्रमणकारियों ने स्त्रियों को आसानी से बंदी बनाकर उनके साथ ज्यादती की। हत्था, बलात्कार जैसी क्रुरतम घटनाओं को अंजाम दिया। स्त्राी देह के उपभोग पक्ष का यथार्थ आज भी हमें थर्रा देती है और इसकी साक्षी है, कबाईली हमलों के बाद कष्मीर घाटी में गूँज उठी नारे – **"निजाये मुस्तफा जिंदाबाद, असि गछि असुन पाकिस्तान बटव बगैर तू बटन्येव सान। अर्थात् हमें क्या चाहिए पाकिस्तान, पंडितों के बिना, पंडिताइनों के साथ।"**[9]

लेखिका चन्द्रकांता ने आतंकवादियों द्वारा अगवा एवं सामूहिक बलात्कार की षिकार हुई स्त्रियों का सदमाग्रस्त स्थिति का चित्राण किया है। चाहे वह आवाज कहानी की बिनी हो या कथा सत्तीस की नसीम– **"दहशतगर्दो के लिए स्त्री सिर्फ एक मादा और भोग्य थी। बलात्कार का शिकार होकर वह शारीरिक और मानसिक स्तर पर ही नहीं, सामाजिक कटघरों में भी पीड़ाएँ और अनकिये गुनाहों की सजा पाती रही।"**[10] इस कारण आतंकियों की चंगुल से छुटी बिनी घर लौटने की नहीं सोचती।

विस्थापित कष्मीरी पंडितों को शरणार्थी कैंपों में अनेक तरह की असुविधाएँ झेलनी पड़ी विषेष कर महिलाओं को, आतंकी हमलों में मारे गये प्रियजनों के मौत का सदमा और आतंकत्रास्त माहौल में रहने के कारण शरणार्थियों को अने शारीरिक और मनौवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न हुई, वर्ष 2000 में जम्मू कश्मीर की सरकार की चिकित्सीय पुनर्वास की रिपोर्ट के अनुसार बड़ी तादाद में इन महिलाओं में अलग तरह के एंग्जाइटी डिसऑर्डर, फोबिया और पैनिक अटैक से ग्रस्त थी। इनमें बड़ी संख्या में अनिद्रा, व्यक्तित्व संबंधी समस्याएँ थी। इनसे जूझने वाली महिलाओं में असामान्य शारीरिक परिवर्तन भी देखी गई, उनमें 40 वर्ष से पहले ही मनोपॉज हो गया। इसका असर उनकी प्रजनन क्षमता दर पर भी नकारात्मक रूप से पड़ा। अल्पायु बच्चों में भी नकारात्मक भाव और तनाव की समस्या पाई गई।

चन्द्रकांता मानवीय संवेदनाओं की लेखिका है, केवल कष्मीरी संवेदनाओं की नहीं, भले ही माध्यम कष्मीर की पृष्ठभूमि को बनाया हो। लेखिका आतंकवाद को वैष्विक समस्या के रूप में देखती है। आज प्रायः हर महाद्वीप किसी न किसी तरह के आतंकवाद से जूझ रहा है। इस संदर्भ में कष्मीर के निजी अनुभवों को व्यापकता प्रदान करते हुए अपनी रचनाओं में फिलिस्तान, तिब्बत, ईराक व ईरान में आये मानवीय संकट पर चिंता व्यक्त करती है– **"जो हुआ, उसे अनहुआ नहीं किया जा सकता, जो डूबा उसे उबारा नहीं जा सकता। याद करती हूँ, उन फिलिस्तीनियों, ईराकियों, तिब्बतियों को देष–विदेष के विस्थापितों–बेघरों को जिनके दुख कमोबेश हमारे जैसे ही है।"**[11]

आतंकवाद के कारण किसी क्षेत्रा में युद्ध या तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न होती है। दुनियाकी बड़ी–बडी राजनीतिक शक्तियाँ अपने राजनीतिक–आर्थिक स्वार्थ या हितों की पूर्ति के लिए गृह युद्ध जैसी स्थिति का सहारा लेती है। किसी देष की सत्ता पलटने के लिए हो या प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने के लिए, युद्ध का सहारा लिया जाता है। ईरान–ईराक के बीच युद्ध, फिलिस्तीन–ईजराईल के बीच संघर्ष हो या चाहे तिब्बत के बीच मानवता के दृष्टि बेकसूर लोग ही मारे जाते हैं। चन्द्रकांता युद्ध जैसे हालातों पर चिंतित होती है– **"बेकसूर ही मारे जाते है जहाँ देखो वहाँ। चाहे फाकलैंड युद्ध हो या ईरान ईराक का झगड़ा।"**[12]

चन्द्रकांता अपनी रचनाओं में संकट या विपति में फंसे मनुष्य ने उम्मीदों की ऊजास या जिजीविशा जगाये रखने का प्रयत्न करती है। उनकी अनेक कहानियाँ स्मृतियों के आधार पर रची गयी है। **"आतंकवादी आपको जमीन जायदाद से बेदखल कर सकते हैं, आपको बेघर कर अपने ही देष में शरणार्थी बनने की जिल्लतों दे सकते हैं, पर वे आपकी**

स्मृतियों को छू नहीं सकते।''[13] तभी तो अपने जर–जमीन से निष्कासित कष्मीरी पंडितों के मानस पटल पर अंकित सुखद स्मृतियाँ ही कठिन वर्तमान को जीने की सबलता प्रदान करता है। यह इतिहास साक्षी भी है कि कठिन समय में मनुष्य के यहाँ नया मार्ग खुलता है। चौदहवीं शताब्दी में सुल्तान बुतकिशन के क्रुरता व अत्याचार से कश्मीर घाटी से पंडितों का सामूहिक पलायन हुआ था, बाकी जो बचे उनका जबरन धर्मातरण हुआ या मार दिये गये। सिर्फ ग्यारह ही घर हिन्दुओं के बचे थे। ऐसे समय में सिकंदर बुत शिकन के वारिस सुल्तान जैनुलाबदीन (बड़शाह) ने निष्कासित पंडितों को घाटी पर दुबारा बसाया एवं उन्हें एक नई उम्मीदें दी।

कश्मीर समस्या और आतंकवाद ने पूरी दुनिया की नजरों को अपनी ओर खींचा है। कश्मीर को मुद्दा बनाकर काफी बहस बाजियाँ होती रही है। अनुमानों के आधार पर आतंकवाद के कारण खोजे जा रहे, लेकिन भीतरी सच्चाईयों की तह तक जाने का जोखिम कोई नहीं उठाता। राजनीतिक आर्थिक व्यवस्था और तंत्र की रीति की एक्सरे करने के बजाय, अखबार, मीडिया और कुछ राजनेता कश्मीरियों पर पूर्वाग्रह से ग्रसित लेख व टीका टिप्पणी करते हैं। कश्मीरियों को धर्म के नाम पर हिन्दु और मुस्लिम अलग–अलग कर देखा जाता है। लेखिका चन्द्रकांता इस पर नाराजगी व्यक्त करती है और ललपद की पंक्तियाँ दुहराती है– **''शैव छुय थलि थलि रोजान अर्थात् शिव तो सर्वत्र व्याप्त है, तुम हिन्दु मुस्लमानों में भेदकर दिलों को मत बाँटो।''**[14] इस प्रकार लेखिका को कश्मीर की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक समरसता एवं सदियों से चले आये हिन्दु मुस्लिमों के बीच भाईचारे व प्रेम पर गर्व है।

कश्मीर में बहुसंख्यकों द्वारा अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के बावजूद लेखिका चन्द्रकांता समुदाय विशेष के प्रति कोई दुर्भावना नहीं। आतंकवाद और सांप्रदायिक तनाव में भी हिन्दु और मुस्लमानों में आत्मीयता की ऊष्मता बची है, सिर्फ मुट्ठीकर लोग समाज में सांप्रदायिक विष घोल रहे। तभी तो 'पोशनूल की वापसी' कहानी का महरा और ''अब्बू ने कहा था'' का फजल रहमान धार्मिक भेदभाव व मजहब से परे मानवता प्रेम और आत्मीयता की मिस्मता प्रस्तुत करते हैं। फजल रहमान लड़कों को समझाता रहा– **''हमारा दीन बेकसूरों को मारने की इज्जत नहीं देता क्यों मारामारी कर बंधुओं को हलाक करते हो?''**[15]

कश्मीर समस्या भारत पाकिस्तान दोनों देश के लिए एक गंभीर मुद्दा है। कश्मीर को लेकर दोनों देशों के बीच अब तक चार युद्ध लड़े गये– 1947–48, 1965, 1971 और 1999 में। हालांकि दोनों देशों के बीच शांति बहाल करने के उद्देश्य से कई द्विपक्षीय वार्ता एवं समझौता (1966) शिमला समझौता (1972) कश्मीर समझौता इन समझौता का उद्देश्य दोनों देशों की प्रजा खुशहाली, अमन चैन के लिए, नियंत्रण रेखा पर संघर्ष विराम का पालन हो, आर्थिक व्यापारिक संबंध पुनस्थापित करने, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न हो, सुनिश्चित किया जाय। लेकिन इस समझौते के बावजूद भी सीमा पारा से घुसपैठ और आतंकी झड़प होते रहे। भारतीय सैनिक सुरक्षा के नाम पर स्थानीय लोगों के प्रति कड़ा रूख अपनाते हैं। भारत, पाक संघर्ष सुलझाने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने भी कई अहम पहल की। सर्वप्रथम मानवाधिकारों के प्रति चिंता व्यक्त की। दोनों देशों के बीच संघर्ष में देश अल्पसंख्यकों के साथ अत्याचार व अपहरण जैसे वारदातों पर चिंता व्यक्त करते हैं।

हालिया आतंकी घटनाओं को देखा जाये तो भारत–पाकिस्तान के बीच कूटनीतिक संबंध अब भी नहीं सुधरी है। 2019 में पठानकोठ एयरबेस हमला उसी हमला 2025 में पहलगाम हमले दो देशो के बीच कूटनीतिक संबंध पर प्रश्नचिन्ह है। इस तरह दोनों देशों के बीच अब भी तनावपूर्ण संबंध है। इसके बावजूद भी पीड़ित कश्मीर इस की आस लगाये बैठे हैं कि कश्मीर समस्या का समाधान होगा। दो देशों के बीच शांतिवर्ता होगी।

निष्कर्ष :–

चन्द्रकांता मानवीय संवेदनाओं की लेखिका है, मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भले ही उन्होंने कश्मीर को पृष्ठभूमि के रूप चुना है। वह मानवीय पीड़ा का गहरी तह तक पहुँचकर उसका सूक्ष्म अंकन करने में समर्थ है। वे आम आदमी की पीड़ा को स्वर देकर मुक्ति की कामना करती है और पाठकों को मानव जीवन के समक्ष आई चुनौतियों से अवगत करानी है।

लेखिका स्वयं एक कश्मीरी होने के कारण मातृभूमि कश्मीर से जुड़ी रहती है। वह अनुभव के ताप से तपकर निजी जीवन के भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति करती है। कश्मीर में आतंकवाद के कारण उपजे विस्थापन और शरणार्थी संकट का मार्मिक चित्रण करती है। कश्मीर में इस्लामिक कट्टरपंथियों द्वारा निष्कासित किए गए अल्पसंख्यक कश्मीरी पंडितों के पलायन, विस्थापन और घर छूटने की पीड़ा का दंश उनकी रचनाओं में स्पष्ट झलकता है।

लेखिका चन्द्रकांता आतंकवाद को वैश्विक समस्या के रूप में चिन्हित करती है और आतंकवाद के कारण उपजे युद्ध ग्रस्त स्थिति विस्थापन की समस्या पलायन, सांप्रदायिकता और बेरोजगारी से प्रभावित सामान्य जन जीवन के प्रति चिंता प्रकट करती है। विश्व भर में जहाँ भी आतंकवाद है वहाँ के पीड़ितों के लिए लेखिका व्यथित है और पाठकों को चिंतन करने पर मजबूर करती है। ईरान इराक की लड़ाई, चीन तिब्बत की झड़प हो या फाकलैंड का युद्ध, सामान्य जन ही इससे पीड़ित है। दुनिया की बड़ी शक्तियाँ अपनी राजनीतिक आर्थिक हितों के लिए, सत्ता की मोह या वर्चस्व के लिए हो रहे आतंकवाद, सांप्रदायिक तनाव या युद्ध जैसी स्थिति का सहारा लेती है। लेखिका कश्मीर में आतंकवाद या तनावग्रस्त माहौल पर अखबार या मीडिया पूर्वाग्रह पूर्ण खबरों की भी घोर निंदा करती है, इन्हें मानवीय संवेदनाओं व उनकी समस्या का समाधान करने से अधिक फिक्र टी0वी0 रेटिंग की होती है।

लेखिका चन्द्रकांता आतंकवाद, सांप्रदायिकता जैसी विकट परिस्थितियों में भी मानव मस्तिष्क में निजीविषा जगाये रखने का प्रयत्न करती है। हिंसा, नफरत, सांप्रदायिकता, छल–छदम के बीच भी मानवता को बचाये रखने का आह्वान करती है। जहाँ मानवता है, वहाँ मानव मूल्य बचे रहेंगे वहाँ एक स्वस्थ समाज और शांतिपूर्ण समृद्ध राष्ट्र का निमार्ण संभव है। अतः चन्द्रकांता की कहानियों का अध्ययन व विश्लोषण करने के बाद स्पष्ट होता है कि लेखिका चन्द्रकांता सच्चे अर्थो में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करने वाली लेखिका है।

संदर्भ सूची :

(1) गोयल, संतोष, चन्द्रकांता का सृजन संसार, अमन प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ सं0–154

(2) पांडेय, आशोक कुमार, कश्मीरनामा, राजपाल एवं संस प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ सं0–283

(3) चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2024, पृष्ठ सं0–49

(4) चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2024, पृष्ठ सं0–15

(5) चन्द्रकांता, अब्बू ने कहा था, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 104

(6) चन्द्रकांता, काली बर्फ, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, संस्मरण 2023, पृष्ठ सं0–114

(7) चन्द्रकांता, कथानगर, अमन प्रकाशन, कानपुर संस्करण 2018, पृष्ठ सं0–105

(8) चन्द्रकांता, काली बर्फ, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली संस्करण 2023, पृष्ठ सं0–16

(9) चन्द्रकांता, काली बर्फ, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली संस्करण 2023, पृष्ठ सं0–13

(10) चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अनन प्रकाशन कानपुर संस्करण 2024, पृष्ठ सं0–70

(11) चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अनन प्रकाशन कानपुर संस्करण 2024, पृष्ठ सं0–82

(12) चन्द्रकांता, दहलीज पर न्याय, अमन प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण (2015), पृष्ठ सं0–58

(13) चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर संस्करण 2024, पृष्ठ सं0–04

(14) चन्द्रकांता, मेरे भोजपत्र, अमन प्रकाशन, कानपुर संस्करण 2024, पृष्ठ सं0–88

(15) चन्द्रकांता, अब्बू ने कहा था, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं0–115